गोरखपुर में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का 90वां स्थापना दिवस समारोह

गोरखपुर की आध्यात्मिक सांस्कृतिक ऐतिहासिक नगरी में मैं आज गुरू गोरक्षनाथ जी महाराज को शत्-शत् प्रणाम करता हूं। उनके तप से, उनकी तपस्या से, उनके समर्पण से, उनकी सेवा से इस भूमि को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और धर्म की नगरी के रूप में सम्मान मिला है।

मुझे आज खुशी है कि गोरक्ष मंदिर के वर्तमान पीठाधीक्षक योगी आदित्यनाथ जी ने उसी परंपरा को, उसी आध्यात्मिक, धर्म और संस्कारों की परम्परा को कठिन परिश्रम से आगे बढ़ाने का प्रयास किया है। पूरे देश के दूर-दराज इलाकों के अंदर एकनाथ संप्रदाय के विचारों को मानने वाले लोगों ने महंतों ने, योगियों ने, भारतीय आध्यात्मिक संस्कृति, धर्म और मंदिरों को, उन मुगल शासकों के आक्रमण से एकनाथ संप्रदाय ने बचाने का काम किया।

ब्रह्मलीन अवधेशानंद जी महाराज को भी मैं प्रणाम करता हूं और विशेष रूप से मैं कह सकता हूं कि दूरदृष्टि से आजादी के उस आंदोलन के समय महामना मदन मोहन मालवीय जी ने जो विचार रखे थे कि धर्म और अध्यात्म के साथ जब तक हम अच्छी शिक्षा, अच्छे संस्कार और अच्छे विचार नहीं देंगे, हम आजादी के आंदोलन की जंग जीत तो जाएंगे लेकिन नए भारत का निर्माण नहीं कर पाएंगे, उसी को आगे लेकर ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी ने वर्ष 1932 के अंदर, जब देश में आजादी का आंदोलन पीक पर था, आजादी के आंदोलन के स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को याद कराने वाली यह धरती है, उन्होंने आजादी के आंदोलन को दिशा दी, लेकिन साथ-साथ उन्होंने कहा कि एक ऐसी शिक्षा जो व्यक्तित्व का निर्माण करे, जो ऐसी पीढ़ी तैयार करे जिसमें शिक्षा, धर्म के साथ-साथ, समर्पण सेवा, समर्पित राष्ट्रभक्ति वाले नौजवानों की एक फौज तैयार हो, इसीलिए उन्होंने

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के नाम से एक छोटा-सा संस्थान शुरू किया। आज यह संस्थान 52 से ज्यादा संस्थाओं को संचालित कर रहा है।

महाराणा प्रताप के बारे में हम सब जानते हैं कि मेवाड़ की धरती में पैदा होने के बाद उन्होंने अपने स्वाभिमान के साथ देश की रक्षा करने के लिए, हिंदूत्व की रक्षा करने के लिए, अपना सब कुछ न्यौछावर करके राज छोड़कर जंगल में जाकर घास की रोटी खाकर देश के स्वाभिमान को बचाने का काम किया।

इसीलिए, महंत दिग्विजयनाथ जी ने इस संस्था का नाम महाराणा प्रताप के नाम पर रखा, ताकि इस संस्थान में पढ़ने वाला हर नौजवान महाराणा प्रताप के जीवन, उनकी त्याग, उनकी तपस्या और उनके स्वाभिमान से प्रेरणा ले सके। उससे एक ऐसी पीढ़ी तैयार हो, जो आजादी के आंदोलन में सक्रिय रूप से भागीदार बने तथा देश के नौजवानों में अच्छी शिक्षा, संस्कार और समग्र विकास के साथ राष्ट्रभक्ति, देशभक्ति तथा स्वाभिमान की भी भावना हो। इसीलिए, उन्होंने उस समय की पीढ़ी को इस तरह से तैयार किया।

आज हम कह सकते हैं कि आजादी के 75 साल बाद इस देश को एक विकसित राष्ट्र और समग्र दृष्टिकोण का राष्ट्र बनाने के लिए हमारे नौजवान बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ, नये सोच, नये विचार, नये नवाचार और नया चिंतन के साथ अपने संकल्प को पूरा करेंगे। इसीलिए, महंत दिग्विजयनाथ जी ने उस समय आजादी की लड़ाई का नेतृत्व किया था। उन्होंने आजादी की लड़ाई के साथ-साथ नौजवानों को अच्छी शिक्षा दिलाने का भी काम किया। आप देख सकते हैं कि उन्होंने 52 संस्थाओं में महिला शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, एग्रीकल्चर, आयुर्वेद और मेडिकल कॉलेज, शिक्षा का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जिसके संस्थान उन्होंने शुरू नहीं किए। उसके साथ-साथ उन्होंने उस समय गोरखपुर में विश्वविद्यालय बनाने के लिए सारी जमीन और जितने भी संसाधन थे, सब सरकार को

देकर गोरखपुर में एक विश्वविद्यालय की स्थापना की। हम ऐसे महंत को इस संस्थापक दिवस पर याद करते हैं। उनके त्याग, तपस्या, सोच व उनकी दूरदृष्टि से हमें नई प्रेरणा मिलती है।

महंत दिग्विजयनाथ जी ने एक समग्र दृष्टिकोण के साथ काम किया था, तभी हम अपनी विरासत और अपनी समृद्ध संस्कृति को याद कर रहे हैं। वे सारे महान व्यक्तित्व, जिन्होंने उस समय नौजवान पीढ़ी को प्रेरणा दी, वे आज भी हमारे लिए प्रेरणास्रोत हैं। स्वामी विवेकानन्द हों, मदन मोहन मालवीय हों, महंत दिग्विजयनाथ हों, इन सबने कहीं न कहीं भारत के नौजवानों को एक दिशा और एक मार्गदशन देने का काम किया। इसीलिए, हम अपनी विरासत को वर्तमान में याद कर रहे हैं। हम भविष्य के अंदर एक नए भारत बनाने के संकल्प को पूरा करेंगे।

आज मुझे खुशी है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् इस तरीके से जो विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है, जिसमें हजारों विद्यार्थी भाग लेते हैं, उन प्रतियोगिताओं के आयोजन के पीछे मकसद यही रहता है कि हम एक स्वस्थ कंपटीशन कराएं। उस स्वस्थ कंपटीशन के अंदर सभी लोग शिक्षा के साथ अपना समग्र विकास और व्यक्तित्व का विकास करें। मैं उन सभी विद्यार्थियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूं, जिन्होंने इस प्रतियोगिता में जीत हासिल करके विजेता बने। वे नौजवान जो यह प्रतियोगिता नहीं जीत पाए, अगली बार और कड़ी मेहनत और परिश्रम करके निश्चित रूप से आने वाले समय में वे प्रतियोगिता में जीतें, ऐसी मेरी उन सबके लिए शुभकामना है।

उत्तर प्रदेश देश का वह राज्य है, जहां वैभवपूर्ण संस्कृति, आध्यात्मिकता, कठिन परिश्रम करने वाले लोग और आजादी के आंदोलन की विरासत है। लेकिन, इसके साथ बदलता उत्तर प्रदेश एक ऐसा राज्य है, जहां आध्यात्मिकता और संस्कृति की नगरी है भी है। नये आधुनिक विकास की दृष्टि से भारत दुनिया का सबसे बढ़ता हुआ देश है, जहां एक समग्र दृष्टिकोण और नये विचार रखने वाले लोग हैं।

कानून का राज होने के कारण दुनिया के बड़े से बड़े देश की भी एक आर्थिक डेस्टीनेशन के रूप में उत्तर प्रदेश उसकी प्राथमिकता होती है। यहां के मुख्यमंत्री जी की जो सोच है कि उत्तर प्रदेश को आर्थिक प्रदेश बनाना है। यहां के लोगों को रोजगार मिले। मुझे याद है कि अगर देश में सबसे ज्यादा कोई पलायन करता था, तो वह उत्तर प्रदेश का व्यक्ति होता था। चाहे कोटा में हो, चाहे राजस्थान में हो, चाहे महाराष्ट्र में हो, आपको तमाम प्रदेशों के अंदर कहीं न कहीं उत्तर प्रदेश का व्यक्ति जरूर मिलेगा। इसीलिए उत्तर प्रदेश के नौजवानों को उसी की धरती पर काम मिले, उसकी बौद्धिक क्षमता का, उसके नए इनोवेशन करने का, नए विचार और चिंतन का लाभ उत्तर प्रदेश और इस देश को मिले, इसी दृष्टिकोण से आज उत्तर प्रदेश आर्थिक तंत्र के रूप में भी तेजी से बढ़ रहा है।

इतने बड़े प्रदेश में, जहां हजारों गांव हैं, वहां स्वास्थ्य की दृष्टि से निश्चित रूप से सर्वश्रेष्ठ काम किया गया है। आज चाहे मातृ-शिशु मृत्यु दर हो, आज बात हो रही थी कि किस तरीके से उत्तर प्रदेश में चिकित्सा के मानकों को राष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं, आने वाले समय में चाहे शिक्षा हो, चाहे चिकित्सा हो, उन मापदंडों पर उत्तर प्रदेश सबसे आगे आ रहा है। इस दिशा में एक नई सोच के साथ काम किया जा रहा है।

मुझे खुशी है कि हमारे देश को जी-20 की अध्यक्षता करने का एक बड़ा सौभाग्य मिला है। उत्तर प्रदेश में भी जी-20 के बहुत सारे कार्यक्रम होंगे। विशेष रूप से एग्रीकल्चर सेक्टर में उत्तर प्रदेश में जहां 76 प्रतिशत सिंचाई सरफेस वॉटर से होती है, हमारा लक्ष्य है कि हम किस तरीके से 100 प्रतिशत सरफेस वॉटर को पहुंचाकर यहां के किसानों को समृद्ध और खुशहाल बना सकें, क्योंकि उत्तर प्रदेश एक कृषि प्रधान प्रदेश है। इसलिए एग्रीकल्चर प्रोडक्शन बढ़े, उसका वैल्यू एडिशन बढ़े, आने वाले समय में जी-20 की कांफ्रेंस के माध्यम से यहां पैदा हुए एग्रीकल्चर के उत्पादनों का वैल्यू एडिशन करके हम पूरी दुनिया में उत्तर प्रदेश और भारत के किसानों को आर्थिक रूप से समृद्ध कर सकें। इस दिशा में जी-20 के तहत उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से कई कार्यक्रम आयोजित होंगे।

एक कार्यशील लोकतंत्र के रूप में उत्तर प्रदेश और भारत ने अपनी छवि बनाई है। मदर ऑफ डेमोक्रेसी, हमारी प्राचीनतम लोकतंत्रीय पद्धति और किस तरीके से लोकतंत्र के माध्यम से हमने इन 75 सालों की यात्रा के दौरान आर्थिक और सामाजिक विकास किया है। उस लोकतंत्र को सशक्त करने में उत्तर प्रदेश की बहुत बड़ी भूमिका रही है। इसीलिए उत्तर प्रदेश में लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना करते हुए, हमारे हर विद्यार्थी और नौजवान के कार्य में, व्यवहार में, आचरण में, लोकतंत्र की कार्यशैली हो। हम चर्चा, संवाद और बातचीत करके समग्र दृष्टिकोण के साथ उत्तर प्रदेश और भारत को आगे बढ़ा सकते हैं। आप उसमें अपना योगदान दें।

मैं विश्वास और भरोसे के साथ यह कह सकता हूं कि आप इंतजार कीजिए, एक दिन वक्त आएगा कि उत्तर प्रदेश पूरी दुनिया में आर्थिक डेस्टीनेशन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बनेगा। उत्तर प्रदेश में रहने वाले हर नौजवान को यहां रोजगार मिलेगा। यहां का किसान समृद्धशील होगा। एक शांत प्रदेश, कानून के राज वाला प्रदेश होगा। हर स्तर पर उत्तर प्रदेश देश और पूरी दुनिया में आगे रहेगा, ऐसी मेरी शुभकामनाएं हैं।